This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

हिंसा परमो धर्मः

;जन नाट्य मंचऋ जुलाई १९८९ऋ ४५ मिनटऋ १२ कलाकार। यह नाटक मुंशी प्रेमचंद की इसी नाम की कहानी का नाट्य रूपांतरण है। इसका पहला प्रदर्शन मुंशी प्रेमचंद के जन्म दिवस समारोह के अवसर पर किया गया था। किसी कहानी को लेकर उसे नुक्कड़ नाटक में ढालने का यह हमारा पहला प्रयास है। यह नाटक सफ़दर के मूल नाट्य रूपांतरण पर आधारित है।द्ध

पात्र विभाजन

१. नट
२. नटी
३. मुल्ला/चतुर्वेदी
४. जामिद
५. दारोग़ा/नज़ाकत
६. मुनीम/क़ाज़ी
७. लछमी/रेडियो एनाउन्सर
८. पात्र-१/द्विवेदी
९. पात्र-२/मदनलाल
१०. पात्र-३/शराफ़त
११. पात्र-४/सेठिया
१२. बूढ़ा/असलम

गोल दायरे में आकर नट गीत गाता है...।

नट : छोटा-सा इक गांव बसा था शहर बनारस के द्वारे
उसी गांव में रहता जामिद बौड़म कहें उसे सारे...

नटी नट को रोकती है।

नटी : काहे करता इतनी जल्दी, रुक जा-रुक जा नट प्यारे।
शहर बनारस? जामिद बौड़म? चक्कर क्या है बतला रे। नट यह तू क्या करता है?

नट : और क्या करेगा नट नाचेगा, गाएगा, खेल दिखाएगा।

नटी : पर खेल दिखाने से पहले तू इतना तो बता दे कि तू आज कौन-सा खेल दिखला रहा है?

नट : सुन नटी, आज सुनाऊंगा मैं जामिद की कहानी
कथा लिखी थी प्रेमचंद ने, नाटक की हमने ठानी।

नटी : अरे नटुआ यह कैसी नादानी? प्रेमचंद तो कब के हो गए फ़ानी।
और तू सुनाता उनके क़िस्से-कहानी!
न न न न न-आज तो सुना तू इक्कीसवीं सदी की कोई कहानी।

नट : तू भी कैसी बात करे है छोरी,
आज भी कितने मिल जाते गोदान के होरी।
पूस की रात किसानों पर है अब भी भारी,
मोटेराम का सत्याग्रह है आज भी जारी

नटी : यह क्या बके जा रहा है, गोदान, होरी, पूस की रात, मोटेराम...

नट : अरी नटी, यह तो प्रेमचंद की कहानियां-क़िस्से हैं। और यह होरी, मोटेराम, यह उन कहानी-क़िस्सों के पात्र हैं। यह कहानियां आज भी उतनी ही सार्थक हैं जितनी तब थीं।

नटी : मतलब?

नट : क्या आज भी किसानों का शोषण नहीं होता?

नटी : होता है।

नट : क्या पूस की रातों में किसान जाड़े से नहीं ठिठुरते?

नटी : हां! बिल्कुल ठिठुरते हैं।

नट : क्या मोटेराम जैसे ब्राह्मण आज भी धर्म की आड़ में अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति नहीं करते!

नटी : बस, बस, बस नटुआ समझ गई। तू यही कहना चाहता है न कि बरसों पहले लिखी गई यह कहानियां आज भी खरी उतरती हैं। तो अब तू जल्दी से बता दे कि आज तू किस कहानी पर कर रहा है कर्म।

नट : आज की कहानी का नाम है ''हिंसा परमो धर्मः''।

नटी : 'हिंसा परमो धर्मः'। हिंसा यानी मारकाट, यानी क़त्लोग़ारत? यह कैसी है इबादत? महात्मा जी के देश में, महात्मा जी के समय में हिंसा का धर्म से क्या तालमेल?

नट : अरे नटी तू जामिद की कहानी जानती है न?

नटी : हां जानती हूं!

नट : तो इतनी देर से बक-बक क्या किए जा रही है। चल

एक काम कर तू जामिद की कहानी सुना फिर अपने आप ही समझ जाएगी कि धर्म और हिंसा का क्या तालमेल है।

नटी : तो नटुआ ले-ले अपना ढोल-मंजीरा, नाटक जल्दी शुरू करा।

नट : *;दायरे में घूम-घूमकर गाना गाता है। कोरस के पात्र नट के पीछे दोहराते हुए चलते हैं।ध्द*

छोटा-सा इक गांव बसा था, शहर बनारस के द्वारे।
इसी गांव में रहता जामिद, बौड़म कहें उसे सारे।।
मंदिर-मस्जिद के बीच में पड़ा मिला था बेचारा।
जीवन में पाखंड नहीं था, ग़ुरबत का वह था मारा।।
बेकाम के हर काम में आता मज़ा उसे
इस ऐब की ही मिलती थी हरदम सज़ा उसे।
जिसने उसे पुकारा वह भागा चला गया
जैसे पतंग के पीछे हो धागा चला गया।
दो पल भी सांस लेने की फ़ुर्सत न थी उसे
ख़ुद अपने काम के लिए मोहलत न थी उसे।

नटी : तो एक दिन इस गांव में, झुरमुटों की छांव में।
जब लोग थे अलसा रहे, जाने कब से,
कौन बात पर मुल्ला जी झल्ला रहे,
नाम ज़ुबां पर ले जामिद का ज़ोर से चिल्ला रहे

मुल्ला जी ग़ुस्से में प्रवेश करते हैं।

मुल्ला : जामिद अरे ओऽऽऽजामिद। न जाने कहां मर गया, यह लड़का! अरे कितनी बार बुलावा भेजा। जाने कहां नदारद हो गया? ज़रूर किसी की बेगार बजा रहा होगा। ऐन मौक़े पर किसी ने कह दिया होगा ''भई जामिद ज़रा ये लकड़ियां तो मेरे घर पहुंचा दो'' और जामिद दौड़ा चला जा रहा है। सुअर के बच्चे से कितनी बार कहा है कि अपने काम से काम रखे लेकिन उस ढीठ के कान पर जूं भी रेंग जाए तो मजाल है। नामुराद न जाने कहां ग़ारत हो गया था जब अल्लाह मियां अक़्ल बांट रहे थे।

नटी : *;दर्शकों सेध्द* इनका हुक़्क़ा भर रहा था।

मुल्ला : क्या? क्या कहा! *;तभी जामिद आता हैध्द*

नटी : लो मौलवी साहब जामिद तो ये आ गया। *;जामिद से कहती हैध्द* क्यों जामिद कहां थे? यहां तो मौलवी साहब कब से तुम्हारे इंतज़ार में बिगड़ रहे हैं।

जामिद : माफ़ करना मुल्ला जी देर हो गई। वो खुतरू बुला के ले गया था उसकी गईया बिहा रही थी,आधी निकल के अटक गई बछिया। बस उसी में यह बखत हो गया।

मुल्ला : ठीक है ठीक है और वक़्त न गॅवा। नमाज़ के चबूतरे से थापा उखड़ा जा रहा है उसे अभी पोत दे। शाम तक सूख जाएगा।

जामिद : जी मुल्ला जी, रात को पोत दूंगा। अभी झबरी ताई का छप्पर मरम्मत करना है। रात बारिश में बेचारी का आधा छप्पर ढह गया।

मुल्ला : उस बुढ़िया के छप्पर की ज़्यादा चिंता है। यहां ख़ुदा के बंदों की इबादतगाह की ख़स्ता हालत नज़र नहीं आती तुझे?

जामिद : ऐसी बात नहीं है मुल्ला जी। आप तो झबरी ताई की हालत जानते ही हैं। तेज़ बुखार में तड़प रही है बेचारी। ऐसी हालत में फिर भीग गई तो अल्ला ही बचाए उसे।

मुल्ला : साले, जब मस्जिद में आकर मुफ़्त की रोटियां तोड़ता है, तब सारी दुनिया की याद नहीं आती तुझे?

जामिद : लेकिन महजिद का काम भी तो कर देते हैं हम।

नटी : *;दर्शक सेध्द* और नहीं तो क्या? इनका हुक़्क़ा भरने से मस्जिद की मरम्मत तक, सब कुछ जामिद ही तो करता है।

मुल्ला : *;जामिद सेध्द* हराम के जने महीने भर का भी न था जब पड़ा मिला था सड़क पर। मां-बाप का कोई ठिकाना न था। *;नटी सेध्द* किसने पाल-पोसकर बड़ा किया इसे? और इस सबके बदले हमारे दो-चार काम कर भी देता है तो कौन एहसान करता है हमारी सात पुश्तों पर!

जामिद : अरे पाला-पोसा तो हमें सारे गांव वालों ने भी है। और फिर हम तो गांव वालों के सभी काम भी कर देते हैं। मंदिर की सफ़ाई, बाड़ की मरम्मत, फ़सल काटना, शादी-ब्याह के न्यौते देना, बीमारी में भाग दौड़ करना अरे सभी काम तो कर देते हैं।

मुल्ला : हमसे ज़बान लड़ाता है। मौलवी फ़ारूक़ से ज़बान लड़ाता है।

नटी : छोड़ो भी मौलवी साब क्यूं पड़ गए बेचारे के पीछे? चबूतरा कौन सा भागा जा रहा है, आज नहीं तो कल पुत जाएगा।

जामिद : जी मुल्ला जी, ताई का छप्पर मरम्मत करके आज रात को ही पोत दूंगा। *;जामिद जाने लगता हैध्द*

मुल्ला : ठीक है, कर अपनी मर्ज़ी, पर याद रखना अल्लाह सब देखता है।

मुल्ला जी बैठते हैं। जामिद रुककर सोचने लगता है।

नटी : क्या सोचने लगा जामिद। छप्पर मरम्मत करना भी अल्लाह का ही काम है। जा जल्दी निकल जा... *;जामिद मुल्ला जी की तरफ़ जाता हैध्द*

जामिद : ठीक है मुल्ला जी चबूतरा अभी पोत देता हूं। ताई का छप्पर बाद में मरम्मत कर दूंगा। *;जामिद का प्रस्थानछ*

नटी : *;दर्शकों सेछ* देखा आपने! जामिद तो बौड़म ही है। अब इसी बात को लीजिए, अगर ताई का छप्पर मरम्मत करने को धर्म समझता है तो मौलवी साहब का दिल रखना भी ज़रूरी है। इसीलिए तो कहते हैं

ग़रज़ ग़ैरों की सेवा में वो अपने दिन बिताता था
न दिन को चैन और न रात में आराम पाता था

नट और गायक मंडली का प्रवेश, गीत गाते हैं।

नट : ग़रज़ ग़ैरों की सेवा में वो अपने दिन बिताता था
न दिन को चैन और न रात में आराम पाता था
और अब तुमको बताऊं उसकी फ़ितरत का नया पहलू
किसी पर जुल्म होते देख चुप वो रह न पाता था
हर एक मज़लूम की करने हिमायत दौड़ा जाता था
भले ही जान जाए पर नहीं वह बाज़ आता था।

दारोग़ा, मुनीम, लछमी का प्रवेश, लछमी से डांट फटकार करते हैं।

दारोग़ा : हरामज़ादी, लालाजी शरीफ़ आदमी हैं तो फ़ायदा उठाती है? रुपये लेकर देना नहीं जानती? मियाद कल गुज़र गई। एक दिन की भी देर हुई उन्होंने नालिश ठोकी। क्यूं मुनीम जी?

मुनीम : अरे लछमी, लाला जैसे धर्मात्मा का पैसा पचाना इतना आसान न है। जो अपनी राज़ी से पैसा दे दे, तो सही है, वरना लाला ग़ैरराज़ी भी पैसे उगाहना जानता है।

लछमी : सरकार यहां का हाल तो देख ही रहे हैं। खड़ी फ़सल राख हो गई। रामजी जानते हैं अबकी कौड़ी-कौड़ी बेबाक कर देती।

दारोग़ा : तेरी ऊख का किसी ने ठेका नहीं लिया है।

मुनीम : जब तक तू कर्ज़ा नहीं उतारेगी तेरी गईया लाला जी के यहां बंधेगी।

लछमी : सरकार, भगवान के लिए मुझ पर रहम करो!

मुनीम :

अरी भगवान की ही दया थी तभी तो लाला जी ने तुझे कर्ज़ा दे दिया। अब तू उनका रुपया नहीं लौटा रही तो अपना ही ईमान ख़राब कर रही है। दारोग़ा जी खुलवा लो इसकी गईया।

दारोग़ा : जग्गू, कल्लू ले चलो इसकी गईया।

लछमी : सरकार माई-बाप रहम करो, मेरे...

दारोग़ा : चल परे हट!

जामिद का प्रवेश। मुनीम और दारोग़ा को टोकता है।

जामिद : दारोग़ा जी, यह क्या झगड़ा है? लछमी की गईया क्यों ले जा रहे हैं?

मुनीम : दूसरों के काम में टांग फंसाने में मज़ा आता है तुझे। जा अपने काम से लग।

जामिद : अरे यह कहां की इंसानियत है। सारा गांव जानता है बेचारी ने कितना नुक़सान उठाया है। और आप हैं कि उससे दाऊदयाल का उधार उगाह रहे हैं?

दारोग़ा : तू इसका ताऊ लगता है क्या? चल अपने काम से लग।

जामिद : हम कुछ भी लगते हों लछमी के, तुम लाला के क्या लगते हो? सरकारी ख़ादिम होके उसकी दलाली करते हो। क्या देता है लाला इस गुंडई का? *;दरोग़ा जामिद पर झपटता है।छ*

दारोग़ा : हरामज़ादे गज़ भर ज़बान निकल आई है तेरी। हमें क़ानून सिखाता है? साले हवालात में बंद कर दूंगा। *;जामिद को धक्का देकर गिरा देता है।छ*

मुनीम : अरे जामिद हवालात की हवा तो खाएगा ही साथ ही अपना परलोक भी बिगाड़ बैठेगा। राम जी पाई-पाई का हिसाब लेना जानते हैं।

मुनीम, दारोग़ा जाते हैं। पीछे-पीछे लछमी जाती है। नटी का प्रवेश।

लछमी : सरकार मेरी गईया...

नटी : जुल्म को चुपचाप सहो, ज़ालिमों के साथ रहो
हो सके तो जुल्म करो, है यही क्या धर्म?

नट का प्रवेश।

नट : बस उसकी ज़ात से औरों को जितना फ़ायदा पहुंचे
मगर अपने लिए उसका न कुछ उपकार होता था
इसी बाइस वो रोटी के लिए मोहताज था सबका
और आए दिन ही भूखे पेट वो थकहार सोता था।

नटी : आख़िर गांव वालों ने जामिद को बहुत धिक्कारा।

नट-नटी बैठते हैं। चार गांववालों का प्रवेश।

१. : क्यूं अपना जीवन गँवा रहा है? दूसरों के लिए मरता है, कोई तेरा पूछने वाला भी है?

२. : अभी दूसरों की सेवा करता है तो लोग दो रोटी दे देते हैं। जिस दिन आ पड़ेगी कोई सीधे मुंह बात भी न करेगा।

३. : कुछ अपनी भी सुध ले जामिद, कब तक यूं बेगार बजाएगा?

४. : अभी हाथ-पांव में दम है जामिद, मेहनत-मजूरी करके चार पैसे जोड़ ले।

चारों : हमारी मान तो शहर चला जा। यहां देहात में क्या रखा है ?

जामिद : शहर! ना ऽऽ ना ऽऽ... ना मैं शहर नहीं जाऊंगा भईया। मेरा सब कुछ यहीं तो है इस गांव में।

१. : सब कुछ?

२. : अरे मूरख न तो तुझे तेरे मां-बाप के बारे में कुछ पता है।

३. : न तेरी जात बिरादरी का।

४. : रात गुज़ारने के लिए भी तुझे मंदिर-मस्जिद की चौखट का मुंह देखना पड़ता है।

चारों : हमारी मान तो शहर चला जा। इसी में तेरी भलाई है।

जामिद : न भईया न। मैं शहर नहीं जाऊंगा। सुना है शहर पहुंचते ही पकड़ कर फ़ैक्ट्रियों में डालकर मशीनों पर काम करवाते हैं।

चारों : अरे पगले, किसी फ़ैक्ट्री में मजूरी करेगा तो चार पैसे जोड़ लेगा। उठ जामिद शहर चला जा।

□चारों जाते हैं। जामिद धीरे-धीरे खड़ा होता है। नटी का प्रवेश।□

नट/नटी : हिदायत गांव वालों की समझ में आ गई उसको
नसीहत दुनियादारी की कुछ ऐसी भा गई उसको,
उठाकर चीथड़े अपने□संजोकर दिल में कुछ सपने
शहर की राह ली उसने□शहर की राह ली उसने।

नटी : और शहर की रौनक़ देखकर जामिद चकरा गया।

□दायरे के चारों ओर बैठे हुए पात्र गेरुए और हरे रंग के झंडे उठाते हैं। पहले दो पात्र मंदिर का एक बड़ा बैनर उठाते हैं। बाक़ी पात्र गेरूए रंग के झंडे उठाते हैं।□

जामिद : भैया जी, यह किसका महल है?

नट : यह महल नहीं मंदिर है□मंदिर□बिड़ला मंदिर।

जामिद : बिरला? यह कौन भगवान हैं? हमारे देहात में तो नहीं होते।

नट : यह भगवान नहीं। ये उन सेठजी का नाम है जिन्होंने यह मंदिर बनवाया है। मंदिर न जाने कौन भगवान का है।

जामिद : इत्ता आलीशान मंदिर बनवाया, एक ही आदमी ने, वाह बिरला जी वाह तुम तो बिरले ही निकले। ख़ूब पुन्न कमा लिए। अब परलोक में तुम्हें अपना ख़ास दरबारी बनाने के लिए सभी देवी-देवताओं में होड़ लगेगी।

□जामिद आगे बढ़ता है दो पात्र मस्जिद के चित्र को उठाते हैं बाक़ी पात्र हरे रंग के झंडे उठाते हैं।□

जामिद : ओई शाबाश्श ऽऽ... यह किस बाश्शा का किल्ला है?

नटी : ये किला नहीं है। मस्जिद है मस्जिद।

जामिद : महजिद? इत्ती बड़ी! कम से कम हज्जार की जमात समा जाए, फिर भी जगह बच जाए। दरवज्जा तो देखो दो-दो हाथी गुज़र जाएं। क्यूं जी यह महजिद क्या अकबर बाश्शा ने बनवाई थी?

नटी : अकबर बादशाह तो कभी का मिट्टी हो गया। ये बनवाई है हाजी मस्तान ने।

जामिद : वा-वाह मस्तान जी वा-वाह। मस्ती से जियो। अब चाहे तुम्हारी चौदह पीढ़ी नमाज ना पढ़े लेकिन जन्नत में उनकी गद्दी पक्की है। वा-वाह भैया हमें तो शहर रम गया।
दीन धर्म की ऐसी महिमा कभी न देखी थी पहले,
हमें तो भैया शहर रम गया चाहे कोई कुछ भी कहले।

नटी : तो जामिद को शहर रम गया। हां तो नट सुना दे लोगों को जामिद ने शहर में क्या देखा?

□नट व गायक मंडली का प्रवेश। गाने के दौरान गायक मंडली के लोग मंदिर का स्ट्रक्चर बनाते हैं।□

नट : चलते-चलते सांझ हो गई, पहुंचा इक मंदिर द्वारे।
जगमोहन था संगमरमर का, और कलश थे उजियारे।।
देख के हालत आंगन की, जामिद गया चकराया रे।
कई दिनों से लगता ऐसा, आंगन न बहुराया रे।।

जामिद : यहां कितनी गंदगी है। आरती का बखत हो रहा है, भक्त जन भी आते ही होंगे। कहीं झाड़ू मिल जाए तो मैं ही साफ़ कर दूं।

□इधर-उधर देखता है फिर अपने गमछे से ही सफ़ाई करता है। दो सेठ व दो पंडितों का प्रवेश।□

सेठिया : चतुर्वेदीजी देख रहे हैं?

चतुर्वेदी : हां सेठिया साहब देख तो रहा हूं।

सेठिया : क्यों भई कौन है यह?

चतुर्वेदी : तुम ख़ुद ही पूछ लो।

सेठिया : *;जामिद सेद्ध* क्यूं भई कौन हो तुम? कौन जात हो और यहां क्या कर रहे हो?

जामिद : परदेसी मुसाफ़िर हूं सरकार। तनिक सुस्ताने बैठा था। ठाकुर जी के मंदिर में गंदगी देखी तो सोचा धर्मात्मा लोग आते होंगे, नैक सफ़ाई कर दूं।

चतुर्वेदी : नाम क्या है तेरा?

जामिद : जामिद, सरकार।

द्विवेदी : मुसलमान है! फिर यहां क्या कर रहा है? चल भाग यहां से।

सेठिया : क्या कर रहे हो द्विवेदीजी?

द्विवेदी : *;सेठिया सेद्ध* मुसल्ला है मंदिर दूषित कर रहा है।

मदनलाल : जल्दबाज़ी ठीक नहीं द्विवेदी जी। पहले पता तो कर लो चक्कर क्या है?

चतुर्वेदी : *;जामिद सेद्ध* मुसलमान है फिर भी मंदिर बुहार रहा है?

जामिद : ठाकुर जी तो सबके हैं सरकार, क्या हिंदू क्या मुसलमान।

सेठिया : तू ठाकुर जी को मानता है!

जामिद : कैसी बातें करते हैं सरकार! जिसने पैदा किया है उसे न मानूंगा तो और किसे मानूंगा।

मदनलाल : अच्छा-अच्छा ठीक है। कर सफ़ाई।

जामिद सफ़ाई करते हुए दायरे के बाहर बैठता है। चारों एक कोने में जाकर बात करते हैं।

सेठिया : *;द्विवेदी सेद्ध* देखा।

द्विवेदी : क्या?

मदनलाल : निरा देहाती है।

चतुर्वेदी : वरना ऐसी चुतियापे की बातें ना करता।

द्विवेदी : ना, ना, ना, ना। अवश्य ही इसे मुसल्लों ने मंदिर दूषित करने भेजा होगा। हो सकता है उनका भेदिया हो!

मदनलाल : अजी छोड़ो भी द्विवेदी जी। तुम्हे तो हर झाड़ी में भूत दिखाई देता है।

द्विवेदी : मैं तो कहता हूं कि मार कर बाहर करो साले को। इसे तो क्या शहर के सारे मुसल्लों का हुलिया बिगाड़ दो। अरे पहले तो लड़-झगड़ कर पाकिस्तान बनवाया, अब साले वहीं जाकर क्यूं नहीं मरते। हमारी नाक में क्यूं दम कर रखा है।

चतुर्वेदी : अब यह क्या बेकार की बात शुरू कर दी। अभी सामने जो मुद्दा है उसके बारे में सोचो। इस लड़के का क्या किया जाए?

द्विवेदी : मैं फिर कहता हूं...

सेठिया : अब बस भी करो यार।

चतुर्वेदी : पहले इसका तो तिया-पांचा कर लें। आओ मिलकर सोचते हैं।

चारों एक कोने में जाकर सोचते हैं।

चतुर्वेदी : सोच लिया।

तीनों : क्या?

चतुर्वेदी : इसे फांस लेते हैं।

द्विवेदी : मतलब?

चतुर्वेदी : मतलबशुर्(करण, समझे!

द्विवेदी : शुर्(करण? न न न,...यह ठीक नहीं है। अरे हिंदू होना हर किसी के भाग्य में नहीं होता। ये तो पिछले जन्मों के कर्मों से निश्चित होता है। अच्छे कर्म करोगे तो हिंदू बनोगे और बुरे करोगे तो मुसलमान। अरे इन मुसल्लों के धर्मांतरण से ही तो हमारा धर्म भ्रष्ट हो रहा है।

चतुर्वेदी : यार, यह क्या धरम-करम पर लैक्चरबाज़ी शुरू कर दी। यह तो राजनीति है प्यारेप्योर पॉलिटिक्स, समझे!

मदनलाल : द्विवेदी जी आज पूरा देश इक्कीसवीं सदी में जा रहा है और आप आज भी बारहवीं सदी में बैठे हैं।

सेठिया : ज़रा सोचो, इससे क़ाज़ी ज़ोरावर हुसैन के चेहरे पर कैसा तमाचा लगेगा। ज़िंदगी भर गाल सहलाता रहेगा साला।

द्विवेदी : न भईया न, मेरा दिल नहीं मानता।

तीनों गाते हैं। बाद में द्विवेदी भी गाने में शामिल होता है।

तीनों : मौक़ा अपने पैरों चलकर तेरे द्वारे आए,
ज़ोर-ज़ोर से तुझे पुकारे कुण्डी को खटकाए।
मूरख है तू अगर वह फिर भी तेरे हाथ न आए,
पकड़ लो जाने न पाए, पकड़ लो जाने न पाए।।

चारों जामिद को पकड़कर दायरे के भीतर लाते हैं। गाना जारी रहता है। गाने के दौरान जामिद का शुर्(करण किया जाता है।

मदनलाल : देख के तेरी श्र(ा भैया,
नैन मेरे भर आए।

सेठिया : ऐसी भक्ति देख के देवी,
चित्त प्रसन्न हो जाए।

चारों : पकड़ लो जाने न पाएपकड़ लो जाने न पाए।

द्विवेदी : अरे इतने दिन तुम कहां छिपे थे
पहले क्यूं न आए

चतुर्वेदी : भोले-भाले परदेसी तुम
मेरे मन को भाए।
पकड़ लो जाने न पाएपकड़ लो जाने न पाए।

सभी पात्र दायरे से बाहर प्रस्थान कर बैठते हैं। नटी का प्रवेश।

नटी : पकड़ लो जाने न पाएपकड़ लो जाने न पाए! तो इस तरह जामिद फांस लिया गया। सीधा-सादा जामिद इस सम्मान का रहस्य कुछ न समझता था। उसे क्या पता था वह किस भंवर में फंसता जा रहा है। वह तो खुश था कि उसका सारा समय ठाकुर जी के यशगान में गुज़रता है। उधर क़ाज़ी ज़ोरावर हुसैन ने यह ख़बर सुनी तो वह आग-बबूला हो गए।

क़ाज़ी ज़ोरावर का प्रवेश। अपने मुरीदों के सामने भाषण देते हैं।

क़ाज़ी : काफ़िरों ने कितनी नीच और घिनौनी हरकत की है। एक बेसहारा खुदा के बंदे को हिंदू बनाया गया है। हिंदू क़ौम ने तो हमें मिटा डालने का बीड़ा उठाया है। तो क्या हम इसे चुपचाप सहेंगे? नहीं। हमें जिहाद की तैयारी करनी होगी। काफ़िरों को बताना होगा कि हम मर जाएंगेमिट जाएंगे मगर इस्लाम की हिफ़ाजत मरते दम तक करेंगे। नारा-ए-तकबीर।

सब : अल्ला हो अकबर।

नारों के बाद दायरे में बैठे पात्र अपने सिर पर पहने हरे पटके को पलटकर दूसरी तरफ़ गेरूए रंग के पटके को पहन लेते हैं। नटी का प्रवेश।

नटी : अगर इस तरफ़ तलवारें निकल रही थीं तो उस तरफ़ भी त्रिशूल बांटे जा रहे थे। ईंट का जवाब पत्थर। एक-दूसरे के ऊपर ज़हर भरे आरोप। और तनाव? तनाव तो बढ़ता ही जा रहा था।

नटी बैठती है। चतुर्वेदी जी उठकर गेरूआ रंग के पटके पहने पात्रों के सामने खड़े होकर भाषण देते हैं।

चतुर्वेदी : हाल ही में इस मंदिर में जिन महापुरुष का शुद्धिकरण संस्करण संपन्न हुआ है, वह पहले एक माने हुए आलिम मौलवी थे। इस धर्मांतरण से हिंदू धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। इससे मुसलमान बौखला गए हैं। हमारे विरुद्ध जिहाद की तैयारियां हो रही हैं। इस स्थिति में हम चुप नहीं बैठ सकते। यह भारतवर्ष हिंदुओं का देश है। गर्व से कहो...

सब : हम हिंदू हैं *दो बार नारों को दोहराते हैं। नटी का प्रवेश।*

नटी : प्रशासन आंखें मूंदे मीठी नींद सो रहा था। और स्थिति हाथ से निकलती जा रही थी।

सभी पात्र नारे लगाते हुए हिंदू मुस्लिम दो गुटों में खड़े होते हैं। एक पात्र रेडियो पर ख़बर पढ़ता है।

रेडियो : अब आप समाचार सुनिए। हमारे विशेष संवाददाता ने ख़बर दी है कि दो संप्रदायों के बीच धर्मांतरण की बात को लेकर शहर में स्थिति तनावपूर्ण हो गई है। इन हालात को मद्देनज़र रखते हुए ज़िला मजिस्ट्रेट ने दोनों संप्रदायों के नुमाइंदों से कल रात एक आपातकालीन बैठक की। इस बैठक में पंडित गजानन चतुर्वेदी और क़ाज़ी ज़ोरावर हुसैन, दोनों ने ही सरकार को आश्वासन दिया कि उनके संप्रदाय की तरफ़ से शहर में दंगा भड़कने की नौबत नहीं आएगी। अंतिम समाचार मिलने तक शहर में स्थिति तनावपूर्ण लेकिन पुलिस के नियंत्रण में थी। समाचार समाप्त हुए। नमस्कार।

सभी पात्र नारे लगाते हुए दायरे के चारों ओर बैठते हैं। नटी का प्रवेश।

नटी : दरअसल हालात पर अब किसी का क़ाबू नहीं रह गया था। सांप्रदायिकता का ज़हर पूरी तरह फैल रहा था। अब तो रोज़मर्रा के आपसी खिंचाव भी सांप्रदायिक तनाव के कारण बन रहे थे।

नटी बैठती है। द्विवेदी एक बूढ़े को मारते हुए दायरे के भीतर लाता है।

द्विवेदी : आज मैं तेरी हड्डी-पसली तोड़ के छोडूंगा।

बूढ़ा : हुज़ूर, मेरा क़ुसूर माफ़ करो।

जामिद का प्रवेश।

जामिद : द्विवेदी जी, आप इस बूढ़े को क्यों मार रहे हैं? आप को इस पर ज़रा भी दया नहीं आती?

द्विवेदी : दया! एक मुसलमान पर? हरगिज़ नहीं। आज मैं इसकी हड्डियां तोड़ कर ही दम लूंगा।

जामिद : आख़िर इसने क़ुसूर क्या किया है?

द्विवेदी : अजी इन मुसल्लों के जो दो चार घर हमारे मुहल्ले में बचे हुए हैं उन्होंने ही हमारी नाक में दम कर रखा है। कभी ब्रह्मवेला में बकरों के हलाल होने की चीख़ें, कभी मुर्गा कटने की चीख़ें! छीः। छीः। अजी इनकी करतूतें बताते तो हमारी जिह्वा भी दूषित होती जाती है। और आज, आज तो इस मुसल्ले की मुर्गी ने हद कर दी, हमारे घर में घुस आई और सारा घर गंदा कर गई।

जामिद : आप भी कमाल करते हैं। इसने क्या मुर्गी को सिखा दिया था कि आपका घर गंदा कर आए।

बूढ़ा : ख़ुदाबंद मैं तो बराबर उसे खांचे में ढांके रहता हूं आज गफ़लत...

द्विवेदी : तू चुपकर बुड्ढे। *;जामिद सेद्ध* देखो जी आप इस चक्कर में ना ही पड़ें तो अच्छा रहेगा।

जामिद : अरे वाह। कैसे ना पड़ें? आपने तो बेचारे को बिला वजह मारते-मारते अधमरा कर दिया है।

द्विवेदी : अभी नहीं मारा है। अब मारूंगा। खोद कर गाड़ दूंगा।

जामिद : खोद कर गाड़ दीजिएगा तो आप भी यूं न खड़े रहिएगा। अगर फिर हाथ उठाया तो अच्छा ना होगा।

द्विवेदी : अबे तेरी इतनी हिम्मत! पंडित सुशील कुमार द्विवेदी से ऐसे बात करता है। ठहर जा तुझे बाद में देखूंगा पहले इस बूढ़े की ख़बर ले लूं।

बूढ़े को मारने ही लगता है कि जामिद द्विवेदी को ज़मीन पर गिरा देता है। यह देख मंदिर से बाक़ी लोग शोर मचाते आते हैं।

चतुर्वेदी : अरे ये क्या? मलेच्छ होकर ब्राह्मण पर हाथ उठाता है। मारो साले को।

जामिद को पीटते हैं। बूढ़ा बीच में रोकता है।

बूढ़ा : अरे क्यूं मार रहे हैं उसे? उसका क़ुसूर क्या है?

दो पात्र जामिद को छोड़ बूढ़े को मारकर बाहर गिरा देते हैं, जामिद को देखकर कहते हैं।

चतुर्वेदी : पापी दग़ा दे गया।

सेठिया : दिखा गया न अपनी जात।

मदनलाल : मलेच्छ तो मलेच्छ ही रहेगा चाहे कुछ कर लो।

द्विवेदी : मैं तो पहले ही कहता था कि इस मुसल्ले का शुद्धिकरण न करो।

चारों : अबे थू है तेरी जात पर

चारों का प्रस्थान, नट और नटी का प्रवेश।

नटी : ज़ुल्म को चुपचाप सहो, ज़ालिमों के साथ रहो,
हो सके तो ज़ुल्म करो, है यही क्या धर्म?

नट : बौड़म मति कछु समझ न पाई, काहे मोरी गत यह बनाई।
काहे इक दिन सर पे बिठायो, आज अकारण जूत बजायो।।

जामिद दुःख हुआ अति भारी, कहां गई सज्जनता सारी।
इसी सोच में रात गुज़ारी, काहे राक्षस भए पुजारी।।
बात उड़ी पर लाए के, पहुंची क़ाज़ी पास।
हुक्म दिया फ़ौरन करो, जामिद की तलाश।।

नट और नटी का प्रस्थान। दो पात्रों का प्रवेश।

नज़ाकत : ज़रा देखना तो मियां। यह तो वही शख़्स लगता है।

शराफ़त : हां मियां। लगता तो वही है।

नज़ाकत : *;जामिद सेख़* क्यूं मियां रात तो तुमने ख़ूब जवां-मर्दी का काम किया।

जामिद : *;कराहता हैख़* जी वोऽ मैंऽ तो...!

शराफ़त : देख रहे हो नज़ाकत, क्या हालत बना दी है ज़ालिमों ने। बोला भी नहीं जा रहा बेचारे से।

नज़ाकत : *;जामिद सेख़* मियां नमाज़ का वक़्त था। सब लोग मस्जिद में मौजूद थे। अगर ज़रा भी ख़बर हो जाती तो क़सम ख़ुदा की हज़ार लठैत पहुंच जाते।

जामिद : जी... मैंऽऽ वो ऽऽ।

नज़ाकत : मियां यह हिंदू कौम है ही ऐसी। कमबख़्त पत्थर से लेकर चूहे तक सबकी पूजा करते हैं। लानत हो इन पर ख़ुदा की। काफ़िर कहीं के।

शराफ़त : अब चलो मियां क़ाज़ी साहब तुमसे मिलने को बेक़रार हैं।

जामिद को लेकर दायरे का एक चक्कर लगाते हैं।

नज़ाकत : क़ाज़ी साहब ऽऽ... क़ाज़ी साहब देखिए किन्हें लेकर आए हैं।

क़ाज़ी का प्रवेश।

क़ाज़ी : वल्लाह! तुम्हें आंखें ढूंढ़ रही थीं। *;जामिद को गले लगाता है।ख़* तुमने तो अकेले ही इतने काफ़िरों के दांत खट्टे कर दिए। क्यूं न हो? आख़िर मोमिन का ख़ून है। इस्लाम को तुम जैसे ख़ादिमों की ही ज़रूरत है। तुम जैसे दीनदारों से ही इस्लाम का नाम रोशन है। नज़ाकत, शराफ़त, मैंने इन काफ़िरों से बदला लेने का पूरा प्लान तैयार कर लिया है। अगले जुमे की नमाज़ के बाद जामिद मियां अपने ऊपर हुए ज़ुल्म की कहानी सुनाएंगे और एक काफ़िर इस्लाम क़ुबूल करेगा।

नज़ाकत : पर ऐसा काफ़िर आएगा कहां से?

क़ाज़ी : क्यूं मियां, असलम को भूल गए क्या। हाल ही में उसने एक हिंदू लड़की से शादी की है और उसने अब तक इस्लाम क़ुबूल नहीं किया है।

शराफ़त : उसी से जाकर क़ाज़ी साहब का हुक्म सुनाएंगे। देखते हैं पट्ठा कैसे इंकार करता है। *दोनों का प्रस्थान।*

क़ाज़ी : चलिए जामिद मियां अब आप आराम फ़रमाइए।

नटी का प्रवेश।

नटी : हालांकि पहले की तरह अब भी जामिद मज़हबी दांव-पेचों को नहीं समझ पा रहा था, मगर अब उसे इस बात का एहसास हो चला था कि मज़हब के रहनुमा उसे कठपुतली का नाच नचा रहे हैं। और इसी बात से वो परेशान भी था।

नज़ाकत, शराफ़त असलम को लेकर आते हैं। नटी का प्रस्थान

नज़ाकत : क़ाज़ी साहब असलम मियां हाज़िर हैं।

असलम : सलाम वालेकुम क़ाज़ी साहब। कहिए आज कैसे याद फ़रमाया मुझे।

क़ाज़ी : असलम तुम तो जानते हो काफ़िरों ने जो जामिद मियां को बेदीन किया है, उसके जवाब में एक काफ़िर को इस्लाम क़ुबूल करना होगा। तुम्हारी बीवी पर अल्लाह का करम हुआ है जो उसे यह मौक़ा नसीब हो रहा है।

असलम : पर क़ाज़ी साहब...

क़ाज़ी : देखो असलम, अल्लाह ने तुम्हें यह साबित करने का मौक़ा दिया है कि तुम एक सच्चे मोमिन हो।

असलम : पर क़ाज़ी साहब मैंने तो ब्याह इसी वायदे के साथ किया था कि इस्लाम क़ुबूल करने के लिए अपनी बीवी पर ज़ोर नहीं डालूंगा।

नज़ाकत : अरे बीवी तो तेरी है न? मुहब्बत से समझाएगा तो मान जाएगी।

क़ाज़ी : उसे समझाओ कि इस्लाम औरतों के हक़ का जितना लिहाज़ करता है उतना और कोई मज़हब नहीं करता। और फिर इस्लाम क़ुबूल करने से आबरू बढ़ती है, घटती नहीं।

शराफ़त : और फिर भी नहीं मानती तो तलाक़ की धमकी दे। तुझे छोड़कर जाएगी कहां?

असलम : मगर यह तो ज़बरदस्ती होगी। मज़हब यह तो नहीं सिखाता।

क़ाज़ी : असलम ऽऽ ख़ुदा का यही हुक़्म है कि काफ़िरों को जिस तरह मुमकिन हो इस्लाम के रास्ते पर लाया जाए। अगर ख़ुशी से न आएं तो ज़ब्र से।

नज़ाकत : हिंदू क़ौम ने तेरी बीवी को पहले ही जात बाहर कर दिया है। ख़ैरियत इसी में है कि वह इस्लाम क़ुबूल कर ले।

असलम : मुझे यह हरगिज़ मंजूर नहीं।

शराफ़त : अबे क्या तू और क्या तेरी मर्ज़ी।

असलम : अरे कर क्या लोगे मेरा?

क़ाज़ी : पकड़ लो साले को, तोड़ दो हाथ पैर, फिर देखते हैं कैसे नहीं मानता।

[नज़ाकत, शराफ़त असलम को मारते हैं। जामिद रोकता है।]

जामिद : छोड़ दो उसे। ये तो सरासर जुल्म है। जहां कहीं भी जाता हूं ग़रीब-मज़लूम पर अत्याचार होते ही देखता हूं।

क़ाज़ी : जामिद मियां अभी आप यह सब नहीं समझेंगे। मेरी राय में आप ख़ामोश ही रहें तो बेहतर होगा। *;नज़ाकत, शराफ़त सेद्ध* तुम देख क्या रहे हो? शुरू करो।

[दोनों असलम को मारते हैं। जामिद फिर रोकता है।]

जामिद : मैं कहता हूं छोड़ दो इसे। मुझे नहीं जाना तुम्हारे जलसे में और ना ही मेरे रहते असलम की बीवी इस्लाम वुळबूल करेगी।

क़ाज़ी : ज़बान खैंच लो हरामज़ादे की। नमकहराम कहीं का। उठा के बाहर फेंक दो सूअर के बच्चे को। और असलम को हमारे साथ ले चलो।

[नज़ाकत, शराफ़त जामिद को मारते हैं। असलम को घसीटते हुए ले जाते हैं। नटी का प्रवेश। जामिद को धीरे-धीरे उठाती है।]

जामिद : जुल्म को चुपचाप सहो, ज़ालिमों के साथ रहो
हो सके तो जुल्म करो, है यही क्या धर्म?

नटी : क़ाज़ी ज़ोरावर हुसैन हों या पंडित गजानन चतुर्वेदी, जामिद जैसे सीधे-सादे इंसान को अपनी राजनीति की बिसात का मोहरा बनाने की भरपूर कोशिश करते हैं। जामिद ने शतरंज की इस बाज़ी का मोहरा बनने से साफ़ इंकार कर दिया और अपनी ज़िंदगी दाव पर लगा दी। मगर आज के ज़ोरावर हुसैन और गजानन चतुर्वेदी कहीं बड़ी साज़िश का हिस्सा हैं। यह वही साज़िश है जिसे सन् ४७ से बहुत पहले प्रेमचंद ने महसूस किया था। क्या हम अकेले इस साज़िश का मुक़ाबला कर सकते हैं?

[नट का प्रवेश]

नट : याद करो सन् सैंतालिस और याद करो वो बंटवारा
कौन सा मज़हब जीता था और कौन-सा मज़हब था हारा।
किन लोगों ने आग लगाई, किनको इसका लाभ हुआ,
पूंजी बंट गई कुछ हाथों में, चारों तरफ़ है अंधियारा।
धर्म के झंडे लाशों पर कब तक लहराए जाएंगे।
कब तक लड़ते रहेंगे इंसां कब तक ख़ून बहाएंगे।

नटी : ''कब तक लड़ते रहेंगे इंसां कब तक ख़ून बहाएंगे''। ख़ून की इस होली को मेरठ, मलियाना, इंदौर, देहली या अवध में होने से कैसे रोका जा सकता है? क्या हम इस लड़ाई को अकेले लड़ेंगे? नहीं! इस तरह तो हम कभी नहीं जीत पाएंगे। यह लड़ाई हमें मिलकर लड़नी है।

;गानाद्ध

यह वक़्त की आवाज़ है मिल के चलो
यह ज़िंदगी का राज़ है मिल के चलो
मिल के चलो-मिल के चलो-मिल के चलो, चलो भई।

O